भेंट

भेंट तीन प्रकार की होती हैं -- रुपए -पैसे यानी धन दौलत की, मन की और आत्मा की. रुपए -पैसे की भेंट सबसे नीची समझी जाती है. गुरु को रुपया पैसा और धन दौलत इसलिए भेंट नहीं की जाती कि वह इनका भूंखा है. आपके धन की उसको ज़रूरत नहीं है. भेंट वह इसलिए लेता है कि उससे आपका उपकार हो और आपका पैसा जहां लगे उससे औरों का भला हो. दुनियाँ के और पदार्थ जहां बन्धन हैं वहाँ रुपया पैसा भी एक बन्धन है और बन्धन टूटने ही चाहिये. यह दुनियाँ में फ़साने वाला है. इसे किसी शुभ कार्य में लगाना, ईश्वर की भेंट है. इस भावना से इसे गुरु अर्पण किया जाता है. इसके साथ - साथ बन्धन ढीला होता है. भैंट देने वाला तो देकर हलका हो जाता है मगर लेने वाले पर इसका बोझ पड़ता है. वह या तो इसका मुआवज़ा दे (दुआ से या और किसी तरह) या अपने शुभ कर्मों में से हिस्सा बांटे. अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो उसकी गिरावट होगी.

भेंट देने से गुरु चरणों में श्रद्धा बढ़ती है, मन शुद्ध होता है और ईश्वर प्रेम बढ़ता है. मन का शुद्ध होना ज़रूरी है. क्योंकि जब तक मन साफ न होगा आत्मा के ऊपर से आवरण दूर नहीं होंगें और ईश्वर का प्रेम नहीं मिलेगा. मन का शुद्ध होना यही है कि आत्मा का प्रेम जागे. ईश्वर का प्रेम आत्मा में क़ुदरती है, लेकिन मन की वासनाएं, इंद्रिय भोग की ख़्वाहिश, बुद्धि की चतुराई, अपनी खुदी - यहीं मन के चारों परदे उसको ढंके रहते हैं. बजाय ईश्वर प्रेम के दुनियावी चीज़ों से प्रेम हो जाता है. जब अभ्यास, वैराग और सत्संग से यह ख़्वाहिशात शान्त हो जातीं हैं तो यहीं मन के परदों का हटना है. इनके हटने पर जो ईश्वरीय प्रेम क़ुदरती छिपा हुआ था आहिस्ता - आहिस्ता उभरने लगता है .

रुपये के मुक़ाबले में मन की भैंट ज़्यादा अच्छी है. गुरु जो कहे उस पर यक़ीन करना, अपने ख़्याल को उसके साथ शामिल कर देना और उसके कहे हुए को उसी शक़्ल में क़बूल कर लेना मन की भैंट है. इसके दो रूप हैं - एक मज़बूरी में क़बूल करना और दूसरे ख़ुशी से क़बूल करना . ख़ुशी यह है कि फलां काम गुरु का है, उसको लगन से, चाव से करना चाहिये. इसका नतीज़ा यह होता है कि मन का रूप बदल जाता है. उसके ख़्याल को ख़ुशी से क़बूल करना - यहीं मन को तोड़ देना है. जिसने मन को तोड़ दिया वही क़ामयाब है.

आपमें ख़्वाहिशात जन्म -जन्मांतर से दुनियाँ की थीं. उन्हें पूरा करने के लिए मालिक ने आपको दुनियाँ में भेजा. आपकी आत्मा ने मनुष्य शरीर धारण किया, उसके ऊपर ख़्वाहिशात का परदा था. ईश्वर की शक्ति से ही काल ने इस दुनियाँ को रचा. ईश्वर ने जीव को भेजा ताकि होश में आ जावे. यह दुनिया को भोग कर उसका रस लेकर ख़्वाहिशात को भोग कर उपराम हो जायें और अपने धाम वापस चले जायें जो उसका असली ध्येय है.

किसी न किसी तरकीब से उनमैं जागृति आ जावे .लेकिन जीव यहां आकर रस लेते -लेते फँस गये, ख़्वाहिशात दुनिया के रस और आनंद की और बढ़ने लगीं, आत्मा पर ग़िलाफ़ बजाय कम होने के और चढ़ते गये और जीव जो पहले से बन्धन में जकड़े हुए थे और ज़्यादा बन्धन में जकड़े जाने लगे. दुनियाँ की यह हालत देख कर जीवों के उद्धार के लिए संत प्रकट हुए. उन्होंने दुनियाँ को उजाड़ा नहीं, क़ायम रखा, क्योंकि दुनियाँ उजाड़ कर तो असल मक़सद पूरा नहीं हो सकता. संत जीव को दुनियाँ की ख़्वाहिशात से उपराम करा कर और दुनिया से वैराग्य और ईश्वर से अनुराग कराकर अपने धाम को वापस ले जाते हैं. अवतारों और संतों में भेद है, अवतार जितने भी आये सब काल देश से आए. काल कभी भी यह नहीं चाहता कि दुनियाँ उजड़ जाय. लिहाज़ा जब - जब दुनियाँ में बुराई और अधर्म बढ़ा अवतारों ने आकर balance (संतुलन) क़ायम किया. बुराइयों को रोका और भलाई को बढ़ावा दिया ताकि दुनियाँ क़ायम रहे. इस तरह रचना को क़ायम रखने के लिए अवतार आते हैं. संत तलवार से काम नहीं लेते, प्रेम से काम लेते हैं, अधर्मी लोगों का नाश नहीं करते बल्कि अधर्म का नाश करके परमार्थ पथ पर चलना सिखाते हैं.

ईश्वर के तीन रूप मानते हैं. ब्रह्मा पैदा करने वाले, विष्णु पालन -पोषण करने वाले और शिव संहार करने वाले. ये तीनों देवता श्रष्टि को क़ायम रखते हैं और जब - जब ख़राबी होतीं है तो विष्णु का अवतार आकर उस ख़राबी को दूर करके ठीक करता है. लेकिन ईश्वर का चौथा रूप भी मानते हैं जो संत या गुरु है जो दुनियाँ से छुड़ाने के लिये आते हैं. जब जीव इस आवागमन से तंग आ जाता है और इससे छुटकारा पाने की ख्वाहिशमंद होता है तो ईश्वर का चौथा रूप (संत रूप) इन्सानी शक़्ल इख्त्यार करता है और जो लोग (अधिकारी) जीवनमुक्त होना चाहते हैं उनको अपनी सोहबत से फ़ैज़याब कराकर अपने धाम यानी दयाल देश को वापस ले जाते हैं जहां जाकर फिर वापिस नहीं आता. इस तरह जीव हमेशा के लिये आवागमन से छूट जाता है. बाकी और जीवों पर जो उसकी सोहबत में आते हैं उन पर भी उसका असर पड़ता है और वे भी आगे चलकर अधिकारी जीवों की श्रेणी में आ जाते हैँ.

यह दुनियाँ काल की रचना है. यहाँ पर जो क़र्ज़ लिया है वह चुकाना होगा यानी जो कर्म किए हैं, अच्छे या बुरे, उनका एवज़ मिलेगा. मन दुनियाँ में लगा है, आत्मा अपने देश को जाना चाहती है. मन का रुख नीचे की तरफ़ है और आत्मा का ऊपर की तरफ़, दोंनों में जद्दोजहद होतीं है. जब मौत आती है जान हाथ पैरों से खींच करके ऊपर को सिमटती है. इन्द्रिय और गुदा से जब निकल जाती है तो पेशाब पखाना छूट जाता है. हृदय से निकलने पर दिल की धड़कन बंद हो जाती है, नब्ज़ छूट जाती है. गला घड़घड़ाने लगता है, वहाँ से निकलने पर आँखों की ज्योति जाती रहती है. इसके बाद भोंहों के बीच के हिस्से से ऊपर चढ़ती है वहां एक पतली सी

नली है जिसे बंकनाल कहते हैं. जब इसमेँ होकर गुज़रती है तो बड़ी तक़लीफ़ होतीं है. आत्मा ऊपर को खींचती हैं और मन की जो गांठ उसके साथ बंधी होती है वह उसमें से नहीं निकल पाती, टुकड़े -टुकड़े हो जाती है. आदमी हाथ पाँव छटपटाता है, कुछ बोल नहीं पाता. इस मुक़ाम पर बहुत अंधकार होता है. अब जो दुनियाँ में फंसे हैं उनको लेने के लिए यमदूत आते हैं और दूसरों को संत. संत जब आते हैं , बात - चीत करते करते जाते हैं, उन्हें तक़लीफ़ नहीं होती . लगता है जैसे सो रहे हों. जिस रास्ते मौत होती है उस रास्ते संत रोज़ गुज़रते हैं, रोज़ मरते जीते हैं. अभ्यासियों ने अनुभव किया होगा कि जब सुरत ऊपर को चढ़ती है तो जिस्म का नीचे का हिस्सा सुन्न हो जाता है. मतलब यह है कि आत्मा वहाँ से खिंच कर ऊपर चढ़ जाती है. दुनियाँ बनती है मन की शक्ति से, परमार्थ मिलता है काल का कर्ज़ा देने से.

हम यहां पर अपनी ख़्वाहिशात की पूर्ति के लिए और उससे उपराम होकर अपने धाम को वापस जाने के लिए आए हैं, यानी हमारे दो आदर्श हैं - पहला यह है कि अपनी ख़्वाहिशात को ज्ञान से खतम करो या भोग कर खतम करो. यहीं काल का क़र्ज़ अदा करना है. उनसे वैराग होने पर ईश्वर प्रेम पैदा होगा और उससे अनुराग पैदा होगा. यही ईश्वर प्राप्ति है. दुनियाँ को हांसिल करो और फिर उसको छोड़ो और ईश्वर प्रेम हासिल करो और उसमें अपने आप को लय कर दो. दुनियाँ को हासिल करना बहुत मुश्किल काम है, और यही दीन और दुनियाँ का बनना है. जो दुनियाँ को हासिल नहीं कर सकता वह दीन को क्या हासिल कर सकता है यानी जिस चीज़ को हांसिल नही किया है, वह छोड़ेगा क्या ?

दुनियाँ के जंजाल, मन के विकार सब शैतान का पसारा हैं. जब तक शैतान से नहीं लड़ोगे कामयाब नहीं होंगे. कामयाब होने पर सच्चा सुःख, हमेशा क़ायम रहने वाला सुःख, ऐसा सुःख जिसके बाद किसी और सुःख की तुम्हें इच्छा नहीं होगी, हासिल हो जायेगा. यहीं लक्ष्य हैं. लेकिन यह एक जन्म का काम नहीं है. कुब्बते इरादी (इच्छा शक्ति) मज़बूत करो. दुनिया की चीजों को देखो, भोगो और छोड़ो, उनसे उपराम हो जाओ. पहले वैराग फिर अनुराग. जब परमात्मा से सच्चा अनुराग होता है और उसका सच्चा प्रेम हासिल हो जाता है , यहीं मोक्ष है. सच्चा प्रेमी मोक्ष नहीं चाहता. इसका साधन यह है की तुम परमात्मा के अंश हो और उसका प्रेम तुम्हारे अन्दर है लेकिन तुमने उसे बाहरी चीज़ों में फैला रखा है, उसे बटोरो . मन की ख़्वाहिशात को ख़तम करो, उसे सब तरफ़ से हटा कर एक ख़्वाहिश पर लाओ, कौन सी ख़्वाहिश - परमार्थ की ख़्वाहिश .

इस काम में हर दम परमात्मा की मदद चाहो. उसकी कृपा से तक़लीफ़ें आती हैं. तक़लीफ़ों की शक्ल में जो उसकी कृपा होती है वह बंधन छुड़ाने के लिए होती है. इसलिए फ़क़ीर को तक़लीफ़ें ज़्यादा होतीं हैं. वह तक़लीफ़ चाहता है कि संस्कार ज़ल्दी कटें. असली चीज़ परमात्मा का प्रेम है. सब कोशिशें उसी को हासिल करने

के लिए होती हैं. वह तब मिलेगा जब सब संस्कार कट जाएँगे. यह मन की भेँट है. इसे जब तक गुरु को नहीं दे दोगे मन आसानी से साफ नहीं होगा. इसी को समर्पण या surrender कहते हैं. रूपये पैसे की भेंट बहुत से लोग कर लेते हैं, मन की भेंट उनसे कुछ कम लोग कर पाते हैं लेकिन आत्मा की भेँट कोई बिरला ही कर पाता हैं. जिसने सब कुछ समर्पण कर दिया उसने सब कुछ पा लिया.

" मैँ तू हुआ, तू मैँ हुआ. मैँ तन हुआ, तू जान हुआ . ऐसी एकता हो गई कि इसके बाद कोई नहीं कह सकता कि मैँ और हूँ , तू और है ". यह आत्मा की भेँट है. यह ज़बानी नहीं होतीं. जिस रोज़ यह दे दी, उसी रोज़ मुराद पूरी हो गई. मोक्ष हो गयी. यह बात भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता के आख़ीर में बताई हैं जो सारी गीता का निचोड़ है, उपसंहार है : " हे अर्जुन ! अब अन्त की बात और सुन जो सब से गुह्य है. तू मुझे अत्यन्त प्यारा है, इसीलिए मैँ तेरे हित की बात कहता हूँ. मुझमें अपना मन रख, मेरा भक्त हो, मेरी पूजा कर और मेरी वंदना कर . मैं तुझसे सत्य प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि तू मुझमें आ मिलेगा क्योंकि तू मेरा प्यारा भक्त है . सब धर्मों को छोड़कर तू केवल मेरी ही शरण में आ जा . मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूँगा . डर मत. "

किसी चीज़ की नापसंदगी या नफरत के ख़्याल से उसे छोड़ देना भेँट नहीं हैं. भेँट सबसे प्यारी चीज़ की दीं जाती है जिससे मोह हो, लगाव हो और जो दुनिया में फसाने वाली हो. कहने का मतलब यह है कि जो चीज़ तुम्हें सबसे प्यारी हो, उसे ईश्वर की राह में क़ुर्बान कर दो. संध्या में बैठो तो देखो कि किस चीज़ का ख़्याल आता है. जिस चीज़ का ख़्याल आए समझो कि वही रुकावट है. संध्या के वक्त जो ख़्याल आते हैं, आत्मा का प्रकाश पाकर वह स्थूल रूप धारण कर लेते हैं. संध्या में ज़िस्म का ग़िलाफ़ उतर जाता है, मन काम करता रहता है. अगर मन का परदा टूट जाय तो ख़्याल में इतनी शक्ति आ जाती है कि आदमी भी ब्रह्मांड की रचना कर सकता है. आत्मा और परमात्मा के बीच की चीज़ मन है, वह हट जाये तो आत्मा वही असल है जो परमात्मा है.

जो ख्वाबात (स्वप्न) आयें उन पर ध्यान रखो. ख़्वाब मन का रूप दिखता हैं. जो चीजें तुम्हें फसाये हुई हैं उन्हें ख़्याली तौर पर क़ुर्बान करो. ख़्याली तौर पर उन्हें परमात्मा के चरणों में रख दो - हे मालिक यह तेरी हैं, हमारा मोह का परदा दूर कर, हमेँ सच्ची रोशनी दिखा ." जब जब हम फंसे, हमने गुरुदेव से प्रार्थना की और उन्होंने हमेशा सहायता करने के साथ - साथ हमारी हिम्मत बढ़ायी. उन्होंने हमेशा आगे बढ़ने की ताक़ीद की. मेरा तो यह तज़र्बा है कि जो आदत मैंने उनसे छिपाई वह रुक गई और जो उनके आगे रख दी वह जाती रही. यह समर्पण है .

गुरुदेव सबका कल्याण करें .

राम संदेश फरवरी १९६४